



३०३८  
४४

# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड ३—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

म. 21]

नई विल्ली, शुक्रवार, जानवरी 10, 1992/पौष 20, 1913

No. 21]

NEW DELHI, FRIDAY, JANUARY 10, 1992/PAUSA 20, 1913

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या की जाती है जिससे कि यह असाधारण संकालन के रूप में  
रखा जा सके।

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
separate compilation

किंग, राज और कांती कार्य मंत्रालय

(कांती कार्य नियम)

गविस्त्रन

नई विल्ली, 10 जनवरी, 1992

सा. का. नि. 39(अ)।—केंद्रीय सचिव, कम्पनो अधिनियम, 1956 (1956/गा 1) को धारा 642 के साथ पठित धारा 58क द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से कंपनी (नियमों का प्रतिप्रहण) नियम, 1978 का और गंशोधन करने को नियमित्वा नियम बनाती है, असाधा।—

1. (1) इन नियमों का नाम यथिष्य कंपनी (नियमों का प्रतिप्रहण) संशोधन नियम, 1992 है।

(2) इन नियमों का नियम 36, 1 अप्रैल, 1992 को प्रवृत्त होगा और ये उत्तर राजपत्र में उनके प्रकाशित का सारीज्ञ से प्रवृत्त होते।

2. कंपनो (नियमों का प्रतिप्रहण) नियम 1975 (जिसे इसमें इसके पश्चात नियम 'कहा गया है') के नियम 3 के उपनियम (1) में—

(क) प्रथम परम्परुक के पहले आले बैंड (क) और बैंड (घ) के स्थान पर नियमित्वा बैंड रखा जाएगा, असाधा।

"कोई भी कम्पनी ऐसे किसी भी नियम का प्रतिप्रहण या नवीकरण नहीं करेगी जो मांग पर या शुरूना पर या ऐसे नियम के प्रतिप्रहण अथवा नवीकरण का दोहराव से छः मास से कम की अवधि या छल्लीस मास से अधिक की अवधि के पश्चात् प्रति गवें हो।"

(ब) नियम (ग) में "कोई प्रतिगत प्रतिवर्ती" शब्दों के स्थान पर नियमित्वा रखा जायेगा असाधा।

"तिमाही अंतरालों में 15 प्रतिवर्त प्रतिवर्ती।"

गवर्नर ने कि जाती भाज का मंदाय तिमाही अंतरालों ये कर प्रविधि किया जाता है वहाँ भाज को रकम में कटौती को जाएगी ताकि वह रकम नियमित्वा अंतरालों पर संगति भाज की रकम से प्रधिक न हो।"

नियमों के नियम 3के "10 प्रतिवर्त" अंकों और शब्दों के स्थान पर "15 प्रतिवर्त" अंक और अन्दर रखे जाएंग।

4. नियमों के नियम 8 में, स्पष्टीकरण के पहले वाले परम्परुक के पश्चात नियमित्वा परम्परुक अनुसार स्थापित किया जाएगा असाधा।

"परम्परुक यह और कि कंपनी जहाँ किसी जमाकर्ता को अपने नियमों का उप अवधिकी नियमित्वा के पूर्व जिसके लिए ऐसे नियम का कंपनी धारा प्रतिप्रहण किया गया था, भाज की उच्चता वर्ग का लोध उठाने के लिए नवीकरण कराने की अनुकूल वेती है, वही कंपनी उस अवकर्ता को उच्चतर दर पर भाज का संवाद करेगी, यदि

(i) ऐसे नियम का नवीकरण इन नियमों के अस्त्य उपबंधों के प्रतुसार और नियमों को अनवर्तित प्रवधि से अधिक प्रवधि के लिए किया जाता है, और

(ii) नियम के प्रतिप्रहण या नवीकरण के समय अनुबद्ध व्याज की दर को नियमों की अवधिकी प्रवधि के लिए घटाऊ एक प्रतिशत कम कर दिया जाता है और उपका अनुपार संवाद या रामायोजन किया जाता है। उपका अनुपार किया जाता है।"

5 नियम में उपाधक प्रबन्ध में—

(क) भाग I में—

- (i) मद 2 (अ) में प्रविष्टियों (vi), (vii) और (viii) के स्थान पर निम्नलिखित प्रविष्टियाँ रखी जाएंगी, अर्थात्—  
“(vi) 13 प्रतिशत या अधिक किन्तु 15 प्रतिशत से कम  
(vii) 15 प्रतिशत पर  
(viii) 15 प्रतिशत में अधिक”;
- (ii) मद 1 (ब्र) में प्रविष्टि (vi), विष्टि (vii) और प्रविष्टि (viii) के स्थान पर निम्नलिखित प्रविष्टियाँ रखी जाएंगी, अर्थात्—  
“(vi) 13 प्रतिशत या अधिक किन्तु 13 प्रतिशत से कम  
(vii) 15 प्रतिशत पर  
(viii) 15 प्रतिशत में अधिक”;
- (ब्र) भाग-I में, मद 1 (ब्र) में “उत्तरूक्त का दण प्रतिशत” अंकों के स्थान पर “उत्तरूक्त का वन्दह प्रतिशत” लिख रखे जाएँगे।

[का. 3/17/91 — सी एस — X]  
साई. प. राष्ट्र, संयुक्त मंत्रिमंडल

टिप्पणी : कंपनी (नियमों का प्रतिग्रहण) नियम, 1975 अधिसूचना सं. ना.का.नि. 43 (अ) तारीख 3-2-1975 भारत का रजिस्टर (असाधारण), तारीख 3-2-1975 के भाग II, घारा 3, उपधारा (i) नामावान निम्नलिखित अधिसूचनाओं द्वारा संशोधन किए गए—

- (1) का आ. 524 (इ) भारीख 18-9-1975
- (2) का. आ. 684 (इ) तारीख 29-11-1975
- (3) सा.का.नि. 427 (ई) भारीख 29-6-1976
- (4) सा.का.नि. 820 (ई) भारीख 24-9-1976
- (5) सा.का.पि. 965 (ई) भारीख 29-12-1976
- (6) सा.का.पि. 385 (ई) भारीख 17-6-1976
- (7) सा.का.नि. 386 (ई) भारीख 17-6-1977
- (8) सा.का.नि. 421 (ई) भारीख 27-6-1977
- (9) सा.का.नि. 703 (ई) भारीख 20-12-1977
- (10) सा.का.नि. 200 (ई) भारीख 30-3-1978
- (11) सा.का.नि. 252 (ई) भारीख 27-4-1978
- (12) सा.का.नि. 341 (ई) भारीख 29-6-1976
- (13) सा.का.नि. 378 (ई) भारीख 17-7-1978
- (14) सा.का.नि. 586 (ई) भारीख 21-12-1978
- (15) सा.का.नि. 109 (ई) भारीख 21-3-1980
- (16) सा.का.नि. 185 (ई) भारीख 1-4-1980
- (17) सा.का.नि. 380 (ई) भारीख 24-6-1980
- (18) सा.का.नि. 175 (ई) भारीख 18-7-1980
- (19) सा.का.नि. 546 (ई) भारीख 24-9-1980
- (20) सा.का.नि. 187 (ई) भारीख 20-3-1981
- (21) सा.का.नि. 44 (ई) भारीख 12-1-1982
- (22) सा.का.नि. 286 (ई) भारीख 19-3-1985
- (23) सा.का.नि. 372 (ई) भारीख 19-4-1975
- (24) सा.का.नि. 482 (ई) भारीख 5-6-1985
- (25) सा.का.नि. 7 (अ) भारीख 2-1-1986
- (26) सा.का.नि. 358 (अ) भारीख 1-1-1987
- (27) सा.का.नि. 620 (अ) भारीख 1-7-1987

(28) सा.का.नि. 850 (अ) भारीख 12-10-1987

(29) सा.का.नि. 551 (अ) भारीख 7-6-1990

### MINISTRY OF LAW, JUSTICE & COMPANY AFFAIRS

(Department of Company Affairs)

#### NOTIFICATION

New Delhi, the 10th January, 1992

G.S.R. 39(E):—In exercise of the powers conferred by section 58 A read with section 642 of the Companies Act 1956 (1 of 1956), the Central Government, in consultation with the Reserve Bank of India, hereby makes the following rules further to amend the Companies (Acceptance of Deposits) Rules, 1975, namely :—

1. (1) These rules may be called the Companies (Acceptance of Deposits) Amendment Rules, 1992.

(2) Rule 3-A of these rules shall come into force on the 1st day of April, 1992 and the remaining provisions shall come into force from the date of their publication in the official gazette.

2. In the Companies (Acceptance of Deposits) Rules, 1975 (hereinafter referred to as the Rules), in rule 3, in sub-rule (1),—

(a) for clauses (a) and (b) occurring before the first proviso, the following clause shall be substituted, namely :—

“(a) no company shall accept or renew any deposit which is repayable on demand or on notice or after a period of less than six months or more than thirty six months from the date of acceptance or renewal of such deposits.”;

(b) in clause (c), for the words “fourteen per cent per annum”, the following shall be substituted, namely :—

“fifteen per cent per annum at quarterly rests:

Provided that where interest is paid at shorter than quarterly rests, the amount of interest shall be discounted so as not to exceed the amount of interest calculated at quarterly rests.”;

3. In rule 3-A of the Rules, for the figures and words “10 percent”, the figures and words “15 per cent” shall be substituted.

4. In rule 8 of the Rules, after the proviso occurring before the Explanation, the following proviso shall be inserted, namely :—

“Provided further that where a company permits a depositor to renew his deposit, before the expiry of the period for which such deposit was accepted by the company, for availing of the higher rate of interest, the company shall pay interest to such depositor at higher rate if—

(i) such deposit is renewed in accordance with the other provisions of these rules and for a period longer than the unexpired period of the deposit, and

(ii) the rate of interest as stipulated at the time of the acceptance or renewal of deposit is reduced by one per cent for the expired period of the deposit and is paid or adjusted or recovered accordingly.”.

5. In the Form annexed to the Rules,—

(a) in part-I,—

(i) in item 2(b), for entries (vi), (vii) and (viii), the following entries shall be substituted, namely :—

- "(vi) 13% or more but less than 15%
- (vii) at 15%
- (viii) more than 15%" ;
- (ii) in item 4(b), for entries (vi), (vii) and (viii), the following entries shall be substituted, namely:—
  - "(vi) 13% or more but less than 15%
  - (vii) at 15%
  - (viii) more than 15%" ;
- (b) in part-2, in item 1(b), for the words "Ten per cent of the above", the word "Fifteen per cent of the above" shall be substituted.

[File No. 3/17/91—CL X]  
Y.A. RAO, Jt. Secy.

**NOTE :** The Companies (Acceptance of Deposits) Rules, 1975—published vide Notification No. G.S.R. 43(E) dated 3-2-1975, Part-II, Section 3, Sub-section (i) of the Gazette of India (Extraordinary) dated 3-2-1975, subsequently amended by Notification No.:

- (i) S.O. 524 (E) dated 18-9-1975
- (ii) S.O. 684(E) dated 29-11-1975
- (iii) G.S.R. 427 (E) dated 29-6-1976
- (iv) G.S.R. 820 (E) dated 24-9-1976
- (v) G.S.R. 965(E) dated 29-12-1976
- (vi) G.S.R. 385(E) dated 17-6-1977

- (vii) G.S.R. 386(E) dated 17-6-1977
- (viii) G.S.R. 424(E) dated 27-6-1977
- (ix) G.S.R. 793(E) dated 20-12-1977
- (x) G.S.R. 200(E) dated 30-3-1978
- (xi) G.S.R. 252(E) dated 27-4-1978
- (xii) G.S.R. 341(E) dated 29-6-1978
- (xiii) G.S.R. 378(E) dated 17-7-1978
- (xiv) G.S.R. 586(E) dated 21-12-1978
- (xv) G.S.R. 109(E) dated 21-3-1980
- (xvi) G.S.R. 185(E) dated 1-4-1980
- (xvii) G.S.R. 380(E) dated 24-6-1980
- (xviii) G.S.R. 435(E) dated 18-7-1980
- (xix) G.S.R. 546(E) dated 24-9-1980
- (xx) G.S.R. 187(E) dated 20-3-1981
- (xxi) G.S.R. 44(E) dated 12-1-1982
- (xxii) G.S.R. 286(E) dated 19-3-1985
- (xxiii) G.S.R. 372(E) dated 19-4-1985
- (xxiv) G.S.R. 482(E) dated 5-6-1985
- (xxv) G.S.R. 7(E) dated 2-1-1986
- (xxvi) G.S.R. 358(E) dated 1-4-1987
- (xxvii) G.S.R. 620(E) dated 1-7-1987
- (xxviii) G.S.R. 850(E) dated 12-10-1987
- (xxix) G.S.R. 551(E) dated 7-6-1990

